महा...

शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 27-11-2020 , वर्ग - BA-III

प्रश्न :- नियोजन काल से पूर्व सोवियत संघ में सोवियत में सीजर्स की संकट को जन्म देने वाली परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए। इसके प्रमाण क्या थे? संकट पर काबू पाने के लिए सरकार ने क्या उपाय किए।
[Describe the circumstances leading to the Scissors crisis in Soviet Union before plan-period. What were its effect? What measures were taken by the Government to overcome the crisis?

उत्तर :- गृह-युद्ध के समाप्ति पर रूसी अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान हेतु सरकार ने मिश्रित आर्थिक नीति का अनुसरण किया। पुनरुत्थान-कार्य हेतु रूस को मुख्यतः घरेलू साधनों पर निर्भर रहना पड़ा; क्योंकि उसे विदेशी सहायता बहुत कम प्राप्त हुई। नवीन आर्थिक नीति के दौरान रूसी अर्थव्यवस्था को कई तरह के संकटों से गुजरना पड़ा, जैसे- ईंधन संकट, विक्रय संकट और सीजर्स संकट। 'ईंधन संकट' कोयले का उत्पादन घट जाने का परिणाम था। इसका परिवहन एवं उद्योग-धन्धों कोयले का उत्पादन घट जाने का परिणाम था। इसका परिवहन एवं उद्योग-धन्धों पर अत्यन्त प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित हुआ। 'विक्रय संकट' कच्चे-माल की खरीद और विनिर्मित माल की

बिक्री हेतु औद्योगिक प्रन्यासों के बीच उपस्थित भीषण प्रतियोगिता का परिणाम था। इस प्रतियोगिता से औद्योगिक एवं कृषि-पदार्थों के बीच विनिमय-दर में औद्योगिक पदार्थों के विरुद्ध परिवर्तन हुआ। प्रतियोगिता के निवारण हेतु प्रन्यासों ने व्यावसायिक सिण्डीकेट गठित किए। इस उपाय से उद्योगों की स्थिति तो सुदृढ़ हो गई, किन्तु 'सीजर्स संकट' को जन्म मिला।

सीजर्स संकट => 'सीजर्स संकट' कृषि पदार्थों के मूल्यों में उपस्थित विषम स्थिति से संबंधित था। 1922 के पूर्वार्द्ध में कृषि मूल्यों में निरन्तर ऊपर उठने तथा औद्योगिक मूल्यों में निरन्तर नीचे गिरने की प्रवृत्ति विद्यमान थी, जिसका परिणाम विक्रय संकट के रूप में फलीभूत हुआ। विक्रय संकट के निवारण हेतु जो उपाय किए गए, उसके परिणामस्वरूप 1922 के मध्य में कृषि-मूल्य एवं औद्योगिक मूल्य परस्पर संतुलित हो गये अर्थात 1913 की स्थिति में आ गए। तदुपरान्त कृषि मूल्यों में निरंतर गिरावट तथा औद्योगिक मूल्यों में निरन्तर वृद्धि

की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई चूंकी कृषि पदार्थों तथा औ-द्योगिक पदार्थों के मूल्य कैंची के दो फलकों की तरह चल रहे थे, इस लिए कृषि मूल्यों एवं औद्योगिक मूल्यों के बीच उपस्थित विषम (असंतुलित) स्थिति को 'सीजर्स संकट' की संज्ञा दी गई है। यह संकट दोनों मूल्य स्तरों के बीच बढ़ते हुए अन्तर तथा उसके परिणाम स्वरूप कृषि एवं उद्योगों में उत्पन्न अवस्था का प्रतीक था। इस संकट की गम्भीरता का अनुमान निम्न तालिका (1913 को आधार वर्ष मानते हुए) से लगाया जा सकता है

अवधि	कृषि मूल्य सूचकांक	औद्योगिक मूल्य सूचकांक
जनवरी 1922	107	92
फरवरी "	105	90
मार्च "	109	82
अप्रैल "	111	77
मई "	113	79
जून "	108	89
जुलाई "	104 ~~[illegible]~~	92
अगस्त "	100.5 ~~89~~	99
~~[illegible]~~ अक्टूबर "	94	112
जनवरी — फरवरी – 1923	88	275

तालिका से स्पष्ट है कि 1922 के पूर्वार्द्ध में कृषि पदार्थों तथा औद्योगिक पदार्थों के बीच विनिमय दर कृषि के पक्ष में थी। इससे किसानों की क्रयशक्ति बढ़ी तथा औद्योगिक वस्तुओं के लिए उनकी मांग भी बढ़ गयी। इसके परिणामस्वरूप 1922 के उत्तरार्द्ध में ठीक विपरीत दिशा में परिवर्तन होने लगा। विनिमय-दर निरन्तर उद्योगों के पक्ष में होती चली गई। प्रतिकूल व्यापार शर्तों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक वस्तुओं की मांग और बिक्री पर्याप्त घट गयी। मांग घट जाने के कारण औद्योगिक वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट आनी चाहिए थी, किन्तु सरकारी उद्योगों की एकाधिकारी स्थिति के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो पाया। बाजार में आपूर्ति सीमित करके सरकारी उद्योग अपनी वस्तुओं के लिए अनुकूल शर्तें (ऊँचा मूल्य) प्राप्त करने में सफल हुए। चूँकि सरकारी उद्योगों का साख की विस्तृत सुविधाएँ प्राप्त थी, इसलिए व्यापारिक सिण्डिकेट (औद्योगिक प्रन्यासों द्वारा स्थापित) विनिर्मित माल का पर्याप्त स्टॉक करने की स्थिति में थी। फलतः

औद्योगिक लाभ की मात्रा में भारी वृद्धि हुई, इसका परिमाण 1922-23 के प्रथम चतुर्थांश में 52 मिलियन डॉलर से बढ़कर अंतिम ~~चतु~~ चतुर्थांश में 116 मिलियन डॉलर हो गया।